# राजनैतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में हर्ष की उपलब्धियाँ

हर्षवर्धन एक महान विजेता, कुशल प्रशासक विद्वान् एवं धर्म तथा कला का संरक्षक था। उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी। हर्षवर्धन ने अपने शासनकाल में समुचित तरीके से ब्राह्मण धर्म पर ध्यान दिया था जिसके कारण ह्वेनसांग ने भारत को 'ब्राह्मणों का देश' कहकर सम्बोधित किया था। इस धर्म में वैष्णव, शैव, शाक्त और गाणपत्य आदि सम्प्रदायों से उपसम्प्रदाय उत्पन्न हो गये थे जो अपने अलग चिन्ह से पहचाने जाते थे। बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में निम्नलिखित सम्प्रदायों का उल्लेख किया है। अर्हत (जैन) मस्करी (परिव्राजक) श्वेतपट (श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय) पाण्डुभिक्षु & भागवत (वैष्णव) वर्णी ब्रह्मचारि आदि। इसमें से अधिकांशतः ब्राह्मण-धर्म के ही सम्प्रदाय थे। विशेषरूप से विष्णु-शिव, सूर्य, दुर्गा आदि के अनेक रूपों में उपासना शुरू हो गयी थी। उन देवताओं के अनेक रूपों में मूर्तियाँ बनती तथा मंदिरों में उसकी पूजा की जाती थी। पहले मूर्तियों को दूध से नहलाया जाता था फिर पुष्प, धूप, गन्ध, ध्वज, बलि आदि समर्पित किये जाते थे। ब्राह्मण-धर्म का पौराणिक स्वरूप निखरता हुआ जा रहा था परन्तु साथ ही साथ उसमें कुरीतियों का भी समावेश होता जा रहा था।

हर्ष के समय में मीमांसक

का काफी जोर था और वैदिक यज्ञ संस्कार पञ्च-महायज्ञ आदि कर्मकाण्ड होते थे। परन्तु ऐसा लगता है कि मुख धार्मिक प्रवृत्तियों में परिवर्तन हो जाने से ये अवशेष मात्र थे।

हर्षवर्धन को दान-पत्रों और मुद्राओं पर अंकित लेखों में महेश्वर (शैव) कहा गया है। केवल ह्वेनसांग के यत्र वर्णन से मालूम होता है कि वह बौद्ध धर्म की ओर झुका हुआ था। ऐसा जान पड़ता है कि वह अपने जीवन के उत्तरार्ध में प्रभावित हुआ था। यद्यपि वह अपने सरकारी कागजपत्रों से अपने को महेश्वर (शैव) ही घोषित करता था, कन्नौज में आयोजित धर्म सभा का जो वर्णन ह्वेनसांग करता है, उसके अनुसार हर्ष वैदिक, पौराणिक, बौद्ध, जैन आदि धर्मों का आदर करता था। सभी सम्प्रदायों के पण्डित उसमें आमंत्रित थे और उसमें सभी सम्प्रदायों के पंडित उसमें आमंत्रित थे और सभी सम्प्रदायों के देवताओं की मूर्ति या उसमें स्थापित और पूजित हुई थी। फिर भी बौद्ध प्रतिमा की प्रतिमा स्थापना सबसे पहले करके उसने बौद्ध धर्म के प्रति आस्था प्रकट की थी। धार्मिक मामले में वह उदार था।

और प्राचीन भारतीय राजाओं की धर्म-नीति का ही उसमे अवलम्बन किया था। हर्षवर्धन दान मे राज्य की आय का बहुत बड़ा अंश दान करता था। वह प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर महादान-भूमि मे प्रति पांचवें वर्ष 'दान महोत्सव', अथवा महामोक्ष - परिषद् का आयोजन करता था। इस अवसर पर बहुसंख्या में लोग इकट्ठे होते थे और वह साधुओं, भिक्षुओं, अनाथों और रोगियों और दरिद्रों को करोड़ों की सम्पति दान करता था। राज्य की पंचवर्षीय बचत का सर्वस्व दानकर केवल अपने शरीर के वस्त्रों को लेकर लौटने में हर्ष को अत्यन्त संतोष होता था। इस अनियंत्रित दान-नीति से हर्ष के शासन और सेना पर अवश्य ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ा होगा।

गुप्त-साम्राज्य के पतन के बाद देश में जो राजनीतिक विशृंखला उत्पन्न हुई और प्रभाकर वर्धन की मृत्यु के बाद जो अराजकता और उपद्रव उत्तर-भारत में शुरू हुए उससे कोई भी उदीयमान और महत्वाकांक्षी राजा यह निश्चय कर सकता था कि उस परिस्थिति में भारत का राजनीतिक एकीकरण बहुत आवश्यक था। भारत के प्राचीन चक्रवर्ती राजाओं का अनुकरण करते हुए हर्ष भी यह निश्चय किया। बाणभट्ट द्वारा हर्षचरित में हर्ष

सैकलोतरापथनाथ' के विरुद्ध से भूषित
करने का विशेष महत्व है। इस विद्रोह को
प्रमाण मानकर यह अनुमान लगाया जा
सकता है कि यह सम्पूर्ण उत्तर भारत का
अधिपति था। किन्तु इस अनुमान को
अक्षरशः मान सिद्ध मान लेना ठीक नहीं
है क्योंकि ह्वेनसांग युवानच्वांग के यात्रा
वर्णनों में हमें भारत में ऐसे ही
स्वतंत्र प्रांत का उल्लेख मिलता है जहां
हर्ष का सिक्का नहीं चलता था किन्तु
यह तो निस्संदेह रूप से कहा जा
सकता है कि उसका साम्राज्य पर्याप्त
विशाल था। उत्तर भारत में हर्ष के
अनेक अभिलेख प्राप्त हुये हैं जिनके
आधार पर हम सम्राट के साम्राज्य विस्तार
का अनुमान लगा सकते हैं। बोसरवड़
और मधुबन के लेखों से भी ज्ञात
होता है कि श्रावस्ती तथा अहिच्छत्र
(रामनगर और बरेली जिला) हर्ष के
साम्राज्य में सम्मिलित थे। हुवेन-त्सांग
के जीवन चरित के संबंध में लिखी गयी
पुस्तक सि-यु-की से ज्ञात होता है
कि हर्ष के साम्राज्य में उड़ीसा प्रदेश
भी सम्मिलित था। इस बात की पुष्टि
उस घटना से होती है जिसमें हर्ष ने
बौद्ध भोक्ता एवं विद्वान जयसेन को उड़ीसा
के अस्सी ग्रामों की राजकीय आय दान
में दे दी थी। इसके अतिरिक्त उसने कामरूप

के कंजगाम नामक स्थान पर परिषद सभा करने से ज्ञात होता है कि हर्ष के विशाल साम्राज्य का विस्तार राजस्थान, वर्तमान उत्तरप्रदेश पूर्वी पंजाब, बिहार, बंगाल, उड़ीसा तक था। दिग्विजय के समय हर्ष की शक्ति और प्रभाव से समीप के अनेक राजाओं ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। साम्राज्य में पैतृक राज्य, भोगराज्य, अधीन राज्य एवं अधीन मित्र सभी सम्मिलित थे। मोटे तौर पर हर्ष के साम्राज्य का विस्तार उत्तर में कश्मीर और नेपाल से लेकर दक्षिण में नर्मदा और महेन्द्र पर्वत (उड़ीसा) तक तक और पश्चिम में सुराष्ट्र से लेकर पूर्व में प्राग्ज्योतिष (आसाम) तक था।